International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-06-2019; Accepted: 07-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 13-15

चौड़ी कूंची के कवि बाबा नागार्जुन

डॉ0 दयानिधि सा
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुक्ता, जि. – बरगढ़, ओड़िशा, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक कबीर के रुप में परिचित प्रगतिकामी युगद्रष्टा कवि बाबा नागार्जुन हिन्दी के प्रगतिशील काव्य के शिखर पुरुष हैं। मध्यकालीन सन्त कवि कबीरदास जैसे विद्रोहात्मक तेवर नागार्जुन में दिखाई पड़ता है। संस्कृत में चाणक्य, मैथिली में यात्री, हिन्दी में नागार्जुन तथा दोस्तों में नागा बाबा के रुप में विख्यात नागार्जुन की काव्य प्रतिभा अद्वितीय है। उनकी रचनाधर्मिता मौजूदा सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था दोष के खिलाफ क्रान्ति खड़ा करने की क्षमता धारण करती है। पारिवारिक जीवन की आर्थिक तंगी से जूझता इस महान कवि ने अपने कर्ममय साहित्यिक जीवन में तमाम सामाजिक–राजनीतिक विद्रुपताओं से जो संघर्ष किया, वह हमेशा हमेशा के लिए याद किया जाएगा।

क्रान्तिदर्शी कवि नागार्जुन का जीवन जितना संघर्षमय और चुनौतियों से भरा हुआ था, उनका कविकर्म भी कम जोखिम से भरा हुआ नहीं था। बाबा को अपने कर्ममय जीवन में अनेक घात–प्रतिघातों का सामना करना पड़ा था। आर्थिक तंगी उनके जीवन में क्षय रोग के समान आजीवन बरकरार रही। परन्तु उनकी ओजस्वी काव्य प्रतिभा कभी भी पारिवारिक संकटों के सामने मलिन नहीं पड़ी। अपने पारिवारिक जीवन के सारे संतापों की तपिश को उन्होंने अपने विराट वक्षस्थल में समेट लिया था। बाबा निश्चय ही साहित्यिक शिव थे, अपने पारिवारिक–सामाजिक जीवन के दुख संतापों के गरल को पीकर नीलकण्ठ बन गए थे और जिन्दगी भर तमाम सामाजिक–राजनैतिक विसंगतियों के संहार में डटे रहे। बकौल शोभाकान्त –''मां अपनी पारिवारिक–आर्थिक परेशानियों से उबकर हमेशा बाबूजी से लड़ने के मूड़ में होती थी। अन्न कष्ट, वस्त्र कष्ट और आवास कष्ट – सभी कुछ झेला है मां के साथ हम सब ने। मां को एक बात के लिए हमेशा नाराजगी रहती थी कि बेटियों की शादी, बेटों के जनेउ–विवाह में जितना कुछ होना चाहिए उसका दसांश भी नहीं हो पाया। गांव में एक मकान तक नहीं बन पाया। यहां तक कि जो खपरैल का घर है, उसकी समय पर मरम्मत नहीं हो पाती।''[01]

बाबा नागार्जुन सच्चे साहित्य साधक तथा जनवादी कवि थे। उन्होंने देश की आम जनता के जीवन संक्रमणों को आत्मसात कर लिया था। अपने जीवन संघर्ष में आगे बढ़ता हुआ उन्होंने तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों का अतिक्रमण किया था। आधुमिक हिन्दी काव्य साहित्य के उत्कर्ष में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। वे एक फक्कड़ स्वाभाव वाले मस्तमौला व्यक्ति थे। सन्त कबीर की भांति वे क्रन्तिदर्शी युगद्रप्टा कवि थे। नागार्जुन के फक्कड. स्वभाव को डॉ. कंचना सिंह के इन शब्दों में समझा जा सकता है– ''नागार्जुन एक व्यक्ति नहीं थे, एक समूचा जनचित्र थे। हिन्दी में कबीर के बाद अगर कोई दूसरा कवि पैदा हुआ तो वे नागार्जून थे। फक्कड़ प्रकृति वाले नागार्जुन ने समाज के प्रत्येक वर्ग की प्रत्येक धड़कन को बड़े इत्मीनान के साथ लिया और उसके बाद अपनी रचनाओं में यथार्थ को निष्पक्ष भाव से उतार कर अपने मन्तव्य को पिरोया।''[02]

नागार्जुन ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिन्दी, संस्कृत एवं मैथिली साहित्य को समृद्ध किया है एवं उनके विकास के नए द्वार खोले हैं। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के संबन्ध में बाबूराम गुप्त का कहना समीचिन है– ''वे जीवन संग्राम के अपराजेय योद्धा, उदार और फक्कड़ मानव, रूढ़ी एवं पुरानी परंपराओं के विध्वंसक बहु श्रूत, बहुपठित, बहु भाषाविज्ञ, प्रगतिशील विचारक, सफल अनुवादक, सुधी सम्पादक, कुशल व्यंग्यकार, बाल साहित्य प्रणेता और असंख्य लेखों, निबन्धों, संस्मरणों, तथा कहानियों के रचयिता हैं। वे समाजवादी प्रतिबद्धता के साथ लिखते हैं।''[03] उनका समूचा व्यक्तित्व एक समर्थ प्रतिभावान युग द्रष्टा महापुरूष का सा व्यक्तित्व है। पूरे भारतीय साहित्य में नागार्जुन जैसा व्यक्तित्व विरले ही देखने को मिलेगा। उन्होंने अपने महान व्यक्तित्व से एक समूचे युग को प्रभावित किया था।

बाबा नागार्जुन के बहु आयामी व्यक्तित्व में कवित्व प्रमुख स्थान अख्तियार करता है। कविता के क्षेत्र में उनका असाधारण व्यक्तित्व जितना दीप्ति हुआ है उतना अन्य साहित्यिक विधा में नहीं । उन्होंने सन्त कवि कबीर की भांति अपने युग से जो संघर्ष किया है और सारी चुनौतियां स्वीकारी हैं वह उनके विद्रोही तेवर को साकार करता है। उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन की कटू, तिक्त, कड़वी_अनुभूतियों को कविता का रुप प्रदान किया है। उनकी कविताएं विषयगत एवं शिल्पगत नई संभावनाओं के असंख्य द्वार खोलती हैं। उनकी कविताएं अपने मौजुदा हालात से जिरह करती हैं। क्रान्तिदर्शी कवि कबीर की लुकाठी लिए वह समाज की विसंगतियों से लड़ने के लिए तन कर हिम्मत से खड़े रहे। उनकी कविताओं के विषय और भाषा दोनों ही प्रबल हैं। मूर्धन्य समालोचक डॉ. रामविलास शर्मा ने उनकी साहित्यिक प्रतिभा को इन शब्दों में रेखांकित किया है,''नागार्जुन ने लोकप्रियता और कलात्मक सौन्दर्य के सन्तुलन और सामंजस्य की समस्या को जितनी सफलता से हल किया है, उतनी सफलता से बहुत कम कवि हिन्ही से भिन्न भाषाओं में भी हल कर पाये हैं।''[04]

भारतीय ग्राम जीवन का यथार्थपरक चित्रण बाबा नागार्जुन ने जितनी तन्मयता के साथ किया है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अपने भोगे हुए जीवन एवं प्रत्यक्ष जीवनानुभवों को कविता में मूर्तरूप प्रदान किया है। ग्राम जीवन की आत्मा उनकी कविता में साकार रूप धारण की हुई है। गांव में सत्विक जीवन जीने वाले सरल प्राण अमृत की सन्तानों का निस्कपट सरल जीवन प्रवाह तथा ग्रामीण लोगों के प्रति आत्मीयताबोध उनकी कविता को एक नयी मानवीय संवेदना प्रदान करता है। उनकी कविताएं लोक जीवन की संवेदनाओं से ओत पोत हैं। अपनी मातृभूमि मिथिला की पवित्र भूमि, वहां के जनमानस तथा वहां की सात्विक संस्कृति के प्रति अपार लगाव कविता में मुखर हो उठा है। ग्रामीण जीवन के प्रति सच्ची संवेदनाओं को उनकी पैनी दृष्टि अपनी ओर खांचती है और अन्तर्मन में बसाकर हृदयग्राही शब्द चित्र प्रदान करती है। 'बहुत दिनों के बाद' नामक कविता में कवि की ग्राम जीवन के प्रति गहरी आस्था इन शब्दों में व्यक्त

हुई है –

''बहुत दिनों के बाद
अब की मैने जीभर देखी
पकी सुनहली फसलों की मुसकान
बहुत दिनों के बाद
अब की मैं जीभर छु पाया
अपनी गंवई पगडण्डी की चन्दवर्णी धूल।''[05]

प्रकृति मनुष्य की चिर सहचरी रही है। प्रकृति की गोद में ही मनुष्य अपना सुख दुख भरा जीवन व्यतीत करता है। प्रकृति से हम सारी जीवनीशक्तियां प्राप्त करते हैं। इसी प्रकृति को लेकर सम्पूर्ण साहित्य में काव्य कविताएं सृजित हुई हैं। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत ने तो प्राकृतिक रूप सौन्दर्य चित्रण में अपनी संपूर्ण काव्य प्रतिभा समेट दी है। बाबा नागार्जुन की कविता भी प्रकृति चित्रण के अनिंद्य रूप सौन्दर्य से वितण्डित है। बाबा ने अपनी कविता में प्रकृति चित्रण का आधार अपने ग्रामीण परिवेश को चुना है। उन्होंने ग्राम्य परिवेश के प्राकृतिक रुप सौन्दर्य का मनभावन वर्णन अपनी कविताओं में किया है। गांव के लहलहाते पेड़ पौधे, हरी भरी फसलें, कटहल, आम, के बगीचे में कोयल का कूजन, फूलों फलों आदियों का सुन्दर चित्र खींचने में कवि परम आनन्द प्राप्त करते दिखाई पड़ते हैं। अपने गांव की मनोरम प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं–

''याद आता मुझे अपना वह तरउनी ग्राम
याद आती है लीचियां वे आम
याद आते है मुझे मिथिल के सुचिर भू भाग
याद आते धान
याद आते कमल, कुमुदिनी और तालमखान
याद आते शस्यश्यामल जनपदों के
रुप गुण अनुसार ही रखे गए वे नाम।''[06]

बाबा नागार्जुन यकीनन एक जनकवि हैं। उनकी कविता आम जनता की हकीकत बयां करती हैं। उनकी कविता उनके जीवन के कटू तिक्त जीवनानुभवों की आंच से तपकर कुन्दन बनकर परिपक्व रुप धारण करती है। उन्होंने देश की आम जनता के दुख दर्द, आशा आकांक्षा, दहशत तथा जीवन संक्रमण का यथार्थ परक चित्र खींचा है। उनकी कविता निम्नवर्गीय दीन–हीन, लाचार–बेबस, सर्वहारा वर्ग की जीवन समस्याओं तथा उनमें पर्याप्त सुधार की वकालत करती है। देश की दलित, पीड़ित, शेषित, अवहेलित आवाम के प्रति गहरी संवेदना उनमें सदैव विद्यमान रही।

जनतन्त्र की आड़ में देश के राजनेताओं ने आम जनता की जिन्दगी के साथ जो खिलवाड़ किया और गांधीजी की रामराज्य की परिकल्पना को धूलिसात करके रख दिया। उन भ्रष्ट नेताओं का चिठ्ठा खोल कर रखने में नागार्जुन पीछे नहीं रहे। आम चुनाव जब महज एक प्रहसन बन कर रह जाता है, तब कवि का जनवादी स्वर मुखर हो उठता है। उन्होंने राष्ट निर्माता पण्डित जवाहर लाल नेहरु के, साम्राज्यवादी शासक एलिजाबेथ का भारत आमंत्रण तथा इन्दिरा जी के कठोर व तानाशही रुख के प्रति विद्रोही तेवर अपनाने का साहसी कार्य किया है। 'अब बन्द करो हे देवी यह चुनाव का प्रहसन' नामक कविता में कवि तत्कालीन शासन व्यवस्था के भष्टाचार व तानाशाही का कच्चा चिठ्ठा खोलते हुए प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी जी के प्रति अपना आक्रोश यों व्यक्त करते हैं–

''अधभूखे अध नंगे डोलें हरिजन गिरिजन वन में
खुद तो चिननी रेशम डाटे उड़ती फिरो गगन में
महंगाई की सूपनखा को कैसे पाल रही हो
शासन का गोबर जनता के मत्थे डाल रही हो ।''[07]

नागार्जुन एक कन्तिदर्शी कवि ही नहीं है, एक 'सोशल एक्टिविस्ट' भी हैं। वह एक जन आन्दोलनकरी कवि हैं। उन्होंने विश्व के प्रमुख जन आन्दोलनों से जुड़कर आम जनता के हक की लडाई में शिरकत की है। समाज सुधारक कार्लमार्क्स के मार्क्सवादी चिन्तन से वह पूरी तरह से प्रभावित हुए थे। सर्वहारावर्ग के पक्षधर के रुप में उन्होंने अनेक जन आन्दोलन कराया है और परिवर्तन कामी क्रान्तिदर्शी विचारों की पुष्टि की है। बिहार के किसान आन्दोलन से सक्रियता पूर्वक जुड़कर गरीब शोषित किसानों के हक के लिए जमींदार महाजन के विरुद्ध मोर्चाबन्दी की है । स्वामी सहजानन्द, जयप्रकाश नरायण, राममनोहर लोहिया, राहुल सांकृत्यायन जैसे जुझारु दलित समर्थित नेताओं के साथ जुड़कर आपने स्वतन्त्र विचार दृष्टि के साथ दलितों पीड़ितों के लिए अथक संघर्ष किया हैं। बड़ी खेद की बात है कि उन्हें स्वतन्त्र भारत वर्ष में सरकार विरोधी कार्यकलापों के लिए जेल यात्रा तक करनी पड़ी है। 'क्रान्ति सुगबुगाई है' कविता की कुछ पंक्तियां देखिए –

''क्रान्ति सुगबुगाई है
करवट बदली है क्रान्ति ने
मगर, अभी भी वह उसी तरह लेटी है
एक बार इस ओर देखकर
उसने फिर से फेर लिया है
अपना मुंह उसी ओर....
संपूर्ण क्रान्ति और समग्र विप्लव के मंजु घोष
उसके कानों के अंदर
खीझ भर रहे हैं या गुदगुदी
यह आज नहीं कल बतला सकूंगा।''[08]

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की तानाशाही व तिकड़मबाजी की कलई खोलती हुई नागार्जुन की कविता देश के शीर्षस्थ नेताओं पर व्यंगबाण की वर्षा करने से पीछे नहीं हटती। महात्मागांधी, जवाहरलाल नेहरु एवं इन्दिरा जी पर भी व्यंग्यात्मक दृष्टि निक्षेप करने से वह नहीं डरते। एक साहसी, पराक्रमी योद्धा की भांति बाबा ने देश की राजनीतिक गतिविधियों की चालबाजी तथा अवसरवादी गतिविधियों पर कठोर प्रहार किया है। पण्डित नेहरु के प्रधानमंत्रित्व के समय सन् 1961 में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ की भारत यात्रा पर जो जोर–शोर की तैयारियां हुईं, वह जनकवि को रास नहीं आया। कवि ने सरकार के इस विराट पैमाने पर स्वागत पर विरोधी तेवर प्रदर्शित करते हुए व्यंग्यात्मक स्वर में कहा –

''आओ रानी हम ढोएंगे पालकी
आओ रानी हम ढोएंगे पालकी
यही हुई है राय जवाहरलाल की
रफू करेंगे फटे पुराने जाल की
यही हुई है राय जवाहरलाल की
एक बात कह दूं मनका, थोड़ी सी लाज उधार लो
बापू को मत छेड़ो, अपने पुरखों से उपहार लो
जय ब्रिटेन का, जय की जय हो इस कलिकाल की
आओ रानी हम ढोएंगे पालकी।''[09]

संपूर्णतः बाबा नागार्जुन संपूर्णता के कवि हैं। वह कर्मवीर कवि हैं। कविता लिखना उनका कर्म ही नहीं धर्म है। और उन्होंने अपने कर्म–धर्म के साथ किसी भी तरह का कोई समझौता नहीं

किया। उन्हें किसी शासन व्यवस्था से भय नहीं था। उन्होंने माता शैलुषी से अभयदान प्राप्त किया था। इसीलिए निर्भय होकर वह देश के सभी पहलुओं पर कविता करते रहे। विशिष्ट समालोचक अरुण कमल के शब्दों में –''नागार्जुन के काव्य की प्रेरणा जीवन के अनुभव रहे, कोई विचार या दर्शन या अध्यात्म नहीं। कविता के हुक्के में विचार का धुआं जीवन जल से छनकर आया। इसीलिए उनकी अंतिम कविताएं भी रस भरी, बिम्ब बहुल और संगीतमय हैं। वह महीन नहीं चौड़ी कूंची के कवि हैं, रंगों का पिटारा लिए। किसी भी श्रेष्ठ कविता की तरह नागार्जुन की कविता में भी अनेक स्तर हैं। वह सहस्र मुखी कविता है। हजारा फूल, जो जीव मात्र की भांति भंगूर भी है और अमर भी।''[10]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागार्जुन : मेरे बाबूजी – शोभाकान्त, पृष्ठ –15
2. नागार्जुन का उपन्यास शिल्प – डॉ. कंचना सिंह, पृष्ठ – 27
3. उपन्यासकार नागार्जुन – बाबूराम गुप्त, पृष्ठ – 19
4. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं, आवरण पृष्ठ
5. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ – 77
6. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ – 79
7. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ – 45
8. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ – 97
9. नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएं, पृष्ठ – 103
10. आलोचना (त्रैमासिक पत्रिका) नागार्जुन विशेषांक, पृष्ठ –157